ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 285-287

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

हिंद स्वराजः सभ्यता–समीक्षा का अनोखा दस्तावेज

रूपम कुमारी
अतिथि सहायक अध्यापक, इतिहास विभाग,जे. न. कॉलेज, नेहरा–ललित नारयण मिथला विश्वविद्यालय– दरभगां (बिहार), भारत

Received- 24.10.2019, Revised- 28.10.2019, Accepted - 03.11.2019 E-mail: - mahesh1981.pandey@gmail.com

सारांश :हिंद स्वराज महात्मा गांधी की सैद्धांतिक ग्रंथ है, जिसकी रचना उन्होंने 1909 ई० में लंदन से दक्षिण अफ्रीका लौटते वक्त 'एस.एस.किल्डोनन कैसल' नामक जहाज पर मात्र दस दिनों (13 नवंबर से 22 नवंबर,1909) में किए थे। यह मूल रूप से गुजराती में संवाद शैली में लिखा गया पुस्तक है, जो पहले 'इंडियन ओपिनियन' नामक साप्ताहिक पत्रिका में लेख माला के रूप में प्रकाशित हुई तथा बाद में 'हिंद स्वराज' नामक पुस्तक के रूप में संकलित की गई। जब गुजराती में लिखित व प्रकाशित 'हिंद स्वराज' की प्रतियों को तत्कालीन बंबई प्रशासन ने जब्त कर लिया, तब उन्होंने जवाबी कार्रवाई के तौर पर अपने मित्र हर्मन कैलेनबैक की खातिर इसका खुद अंग्रेजी अनुवाद कर प्रकाशित करवाया।

कुंजीभूत शब्द– जल, पृथ्वी, अग्नि, वायु, आकाश, प्रदूषण ,तत्व

'हिन्द स्वराज' महात्मा गांधी की विचार– पद्धति और सभ्यता को लेकर उनके मंतव्य को सामने रखने वाली एक महत्वपूर्ण रचना है। गांधी विचार को जानने और समझने का यह मूल दस्तावेज है। यह रचना उनके निजी अनुभव, दक्षिण अफ्रीका का आंदोलन और कई पश्चिमी तथा देशी विचारकों के अध्ययन से प्राप्त व्यापक अनुभव के संश्लेषण से उपजी विचार–श्रृंखला है। 'हिंद स्वराज' में कुल बीस अध्याय है। प्रत्येक अध्यायों को उनकी वैचारिक यात्रा का अलग–अलग पड़ाव कहा जा सकता है। जैसा कि उन्होंने स्वयं 'हिंद स्वराज' की प्रस्तावना में स्पष्ट शब्दों में लिखा ."इस विषय पर मैंने जो 20 अध्याय लिखे हैं, उन्हें पाठकों के सामने रखने की मैं हिम्मत करता हूं। जब मुझसे रहा नहीं गया तभी मैंने यह लिखा है। बहुत पढ़ा, बहुत सोचा। विलायत में ट्रांसवाल डेप्युटेशन के साथ मैं चार माह रहा, उस बीच जितना हो सका, उतने हिन्दुस्तानियों के साथ सोच विचार किया, हो सका उतने अंग्रेजों से भी मैं मिला। अपने जो विचार मुझे आखिरी मालूम हुए, उन्हें पाठकों के सामने रखना मैंने अपना फर्ज समझा, जो विचार यहां रखे गए हैं, वह मेरे हैं और मेरे नहीं है। वे मेरे हैं, क्योंकि मैं उनके अनुसार आचरण करने की आशा करता हूं। वह मानो मेरी आत्मा में बस गए हैं। वह मेरे नहीं हैय क्योंकि उन्हें मैंने ही अपने चिंतन के द्वारा ढूंढ निकाला हो, सो बात नहीं हैय वे कई पुस्तकें पढ़ने के बाद बने हैं। अपने मन में भीतर ही भीतर मैं जिस चीज को महसूस करता था, उसे उन पुस्तकों से समर्थन मिला।"1

गांधीजी ने आत्मकथा 'हिंद स्वराज' के काफी बाद लिखी, किंतु गांधी के व्यक्तित्व का प्रतिबिंब हिंद स्वराज' में ही मिल जाता है। गांधी के विचारों को जानने के लिए यह पुस्तक बीज ग्रंथ है। लॉर्ड लोथियन ने सेवाग्राम में महादेव हरिभाई देसाई से हिंद स्वराज' की प्रति मांगी थी और उसने कहा था कि "गांधीजी आजकल जो कुछ भी कह रहे हैं, वह इस छोटी सी किताब में बीज के रूप में है और उन्हें ठीक से समझने के लिए इस पुस्तक को बार बार पढ़ना चाहिए।" "गांधी के विचारों को जानने के इच्छुक लोग हिंद स्वराज के माध्यम से ही उनकी आत्मकथा सहित उनकी रचनाओं का मर्म समझ सकते है।"2

गांधी जी के राजनैतिक गुरु गोपाल .ष्ण गोखले ने 'हिंद स्वराज' को पढ़ने के बाद इसे वैचारिक व भाषाई .ष्टि से कच्चा और जल्दबाजी में लिखी गई रचना कहा और उसने इस पुस्तक के संबंध में भविष्यवाणी की थी कि गांधी खुद ही एक वर्ष बाद इस पुस्तक का नाश कर देंगे, लेकिन गोखले जी की यह भविष्यवाणी सच नहीं निकली। गांधी की .ष्टि में एकाध अपवाद को छोड़कर यह सदैव और सब के लिए पठनीय, मननीय एवं आचरणीय बना रहा। 1921 ई० में गांधी ने लिखा–"वह (हिन्द स्वराज) द्वेषधर्म की जगह प्रेमधर्म सिखाती हैय हिंसा की जगह आत्मबलिदान को रखती हैय पशुबल से टक्कर लेने के लिए आत्मबल खड़ा करती है। उसमें मैंने सिर्फ एक ही शब्द और वह एक महिला मित्र की इच्छा को मानकर रद्द कर किया है। उसे छोड़कर कुछ भी फेरबदल नहीं किया है। इस किताब में आधुनिक सभ्यता की सख्त टीका की गई है। यह 1909 में लिखी गई थी। इसमें मैंने जो मान्यता प्रगट की है, वह आज पहले से ज्यादा मजबूत बनी है––––"(उपोदघात से उद्धृत)। 1938 ई० में भी गांधी जी को भाषा बदलने के

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

सिवा और कुछ फेरबदल करने जैसा नहीं लगा। (उपोद्घात से उद्धृत)। अक्टूबर और नवंबर 1945 में गांधीजी और जवाहरलाल नेहरू के बीच एक पत्राचार से स्पष्ट रूप से प्रतीत होता है कि गांधीजी ने जिन विचारों का प्रतिपादन हिंद स्वराज में किया था, उनके प्रति जीवन के अंत तक एकनिष्ठ थे। 'हिंद स्वराज' में जो 'स्वराज' की गांधीवादी रूपरेखा का प्रथम प्रकटीकरण था, उसकी भावना गांधीजी में जीवनपर्यंत वैसी ही बनी रही, केवल ब्यौरे के मामले में मामूली संशोधन किए गए।

गांधीजी ने इस पुस्तक में अहिंसा, नैतिकता, स्वदेशी, स्वावलंबन, सभ्यतागत विमर्शों पर अपने विचार प्रस्तुत किए । उन्होंने मशीनी सभ्यता की आलोचना करते हुए पश्चिमी देशों के विकास को अस्वीकार कर दिया और स्पष्ट शब्दों में लिखा कि हमें ऐसे विकास की आवश्यकता नहीं है। उसने 'हिंद स्वराज' में अपने सपनों के स्वराज की तस्वीर प्रस्तुत की है।

'हिंद स्वराज'का शाब्दिक अर्थ है– हिंदुस्तान की आजादी, लेकिन गांधी का दर्शन केवल 'हिंद स्वराज' का शाब्दिक अनुवाद नहीं है। 'स्वराज' शब्द उनके लिए न तो स्वशासन पर आधारित राजनैतिक धारणा है और न ही ब्रिटिश सरकार का स्थानापन्न या वैकल्पिक शासन। गांधी के स्वराज का अर्थ भारत की राजनैतिक स्वाधीनता के साथ साथ करोड़ों भारतीयों का आत्मिक और नैतिक पुनरूत्थान है। उनके लिए भारतीय जनजीवन की समग्र और सम्पूर्ण मुक्ति का नाम स्वराज है।

गांधीवादी स्वराज का सारतत्व काफी व्यापक है। उनके लिए स्वराज का मतलब निषेधात्मक भी था और सकारात्मक भी। निषेधात्मक रूप से देखने पर स्वराज का अर्थ था . भारत पर ब्रिटेन के राजनीतिक नियंत्रण से मुक्ति, पश्चिमी सभ्यता, पश्चिमी जीवन . मूल्यों, मशीनरी और इन सब से बढ़कर सभी विदेशी राजनीतिक प्रभाव से मुक्ति । हिंद स्वराज में गांधी ने लिखा है– "भारतीयों की मुक्ति इसी में है कि उन्होंने जो कुछ पिछले पचास वर्षों में सीखा है, उसे भुला दें। रेलगाड़ियों, तार, अस्पताल, वकील, डॉक्टर और इसी प्रकार के सब आधुनिक वस्तुओं को भूल जाना होगा और तथाकथित उच्च वर्ग को साधारण किसान जैसा जीवन व्यतीत करना सीखना होगा।" स्वराज का सकारात्मक पहलू विकेंद्रित राजनीतिक समानता, आर्थिक एवं सामाजिक समानता, सर्वोदय एवं स्वदेशी की अवधारणा है, जो स्वराज को वास्तविक महत्व प्रदान करता है।

गांधीजी ने पाश्चात्य भौतिकवादी आधुनिक सभ्यता का तीव्र विरोध किए हैं। हिंद स्वराज के 'सभ्यता के दर्शन' नामक अध्याय में उन्होंने आधुनिक सभ्यता की समस्याओं और अंतर्विरोधों को स्पष्ट किया है। उन्होंने इस सभ्यता को शैतानी सभ्यता और चंडाल तक कह डाला है। उनके अनुसार, "सभ्यता आचरण की वह विधि है,जो व्यक्ति को कर्तव्यपथ का बोध कराती है।"3 कर्तव्य पथ का बोध होने का मतलब है– नैतिकतापूर्ण आचरण करना। नैतिकता का अर्थ है– अपने मन और इन्द्रियों को वश में रखना। ऐसा करते हुए हम स्वयं को पहचानते हैं, यहीं सभ्यता है, जबकि पश्चिमी सभ्यता में नैतिकता एवं धर्म का कोई स्थान नहीं है। यह सभ्यता मनुष्य को मनुष्य को दूर कर देती है। भारतीय सभ्यता के विषय में हिंद स्वराज में गांधी जी कहते हैं–"मैं तो जनता हूं कि हिंदुस्तान ने जिस सभ्यता का नमूना दुनिया के सामने पेश किया है,दुनिया की कोई भी सभ्यता उसका मुकाबला नहीं कर सकती, जो भी हमारे पुरखों ने बोए हैं , उसकी बराबरी कर सके ऐसी कोई चीज देखने में नहीं आई। रोम मिट्टी में मिल गया, यूनान का सिर्फ नाम रह गया, मिस्र की बादशाहत चली गई, जापान पश्चिम का चेला बन गया, लेकिन गिरा, टूटा जैसा भी हो हिंदुस्तान आज भी अपनी बुनियाद में मजबूत हैं।"4 भले ही इसमे कमियां और कमजोरियां है, लेकिन यह सभ्यता शोषण, अन्याय, अनीति, हिंसा और पाशविक बल पर आध ाारित होने की बजाय सत्य, अहिंसा, न्याय, त्याग, आत्मबल, प्रेमबल पर आधारित है। भारतीय संस्.ति और सभ्यता का . ष्टिकोण शरीर, मन और आत्मा का समन्वयात्मक विकास है। इसमें शरीर के विकास के साथ साथ आत्मा और मन के विकास पर भी ध्यान दिया जाता, लेकिन आधुनिक सभ्यता केवल शरीर के विकास पर ही ध्यान देती है। शरीर केंद्रित सुख की तलाश, मूल्यहीनता, धन और लोभ की ओर आ.ष्ट आधुनिक सभ्यता अहंकार को बढ़ावा देती है। उद्योगवाद, उपभोग वाद और शोषण पर आधारित इस सभ्यता की जड़ें हिंसा में समाई हुई है और अपना पोषण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उसी से पाती है, जिसका परिणाम और भी अधिक हिंसा के रूप सामने आता है। अतः गांधी जी बड़ें .ढ़ शब्दों में कहते हैं कि 'आधुनिक सभ्यता की चपेट में आए हुए लोग खुद की जलाई हुई आग में जल मरेंगे।'

लेकिन आधुनिक सभ्यता के प्रति गांधी का . ष्टिकोण आलोचनात्मक है, नकारात्मक नहीं। वे आधुनिक सभ्यता के विभिन्न योगदानों जैसे नागरिक स्वतंत्रता, समानता, अधिकार, जीवन के आर्थिक स्तर को ऊंचा बनाने की संभावना, महिलाओं की मुक्ति और धार्मिक सहिष्णुता का स्वागत करते हैं, लेकिन उसी समय वे कहते हैं कि उनका यह योगदान तभी सार्थक हो सकता है , जब स्वतंत्रता और स्वराज, अधिकार और कर्तव्य, ज्ञान और नैतिकता, आर्थिक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

और आध्यात्मिक उन्नति, धार्मिक सहिष्णुता और धार्मिक विश्वास के बीच अनुबद्ध हो।

गांधी के लिए 'आधुनिक' होने से ज्यादा बड़ा प्रश्न 'मनुष्य' होने की नैतिक शर्तों की महत्ता का था। दैहिक सुख और भौतिक प्रगति के पैमाने के साथ नैतिक श्रेष्ठता की अनिवार्यता को जोड़ें रखना था।

गांधीजी आधुनिक सभ्यता के साथ साथ मशीनीकरण का भी विरोध किया है। हिंद स्वराज में उन्होंने कहा हैं कि "आधुनिक पाश्चात्य संस्.ति और उसके टेक्नोलोजी समेत सभी प्रकट रूप शैतान का साम्राज्य है।"5 हिंद स्वराज में गांधीजी ने जो मशीन (तंत्रों) का विरोध किया, उसे विज्ञान, विकास या प्रगति का विरोध मान लिया जाता है, जबकि गांधी ने एक प्रश्न के जवाब में कहते है कि " तमाम यंत्रों के खिलाफ में कैसे हो सकता हूं, जब मैं जानता हूं कि यह शरीर भी एक बहुत नाजुक यंत्र हैं,खुद चरखा भी एक यंत्र है, मेरा विरोध यंत्रों के लिए नहीं है, बल्कि यंत्रों के पीछे जो पागलपन चल रहा है, उसके लिए है। आज तो जिन्हें मेहनत बचाने वाले यंत्र कहते हैं, उनसे मेहनत जरूर बचती है, लेकिन लाखों लोग बेकार होकर को भूखों मरते हुए रास्तों पर भटकते हैं। समय और श्रम की बचत तो मैं भी चाहता हूं, परंतु किसी खास वर्ग की नहीं बल्कि सारी मानव जाति की होनी चाहिए।"

गांधीजी यंत्रों के खिलाफ नहीं थे, बल्कि यंत्रों का जो बुरा उपयोग हो रहा है, यह जो मजदूरों के शोषण के कारण बन रहे हैं, उसके खिलाफ थे। उनके अनुसार, यंत्रों की खोज और विज्ञान लोभ के साधन नहीं रहने चाहिए। तीन प्रकार के यंत्र विध्वंसक, मारक और तारक में से गांध ी ने विध्वंसक और मारक यंत्र का विरोध किया है, जबकि तारक यंत्रों का उन्होंने स्वागत किया है। मशीनों के कारण औद्योगिक क्रांति हुई। औद्योगिकीकरण ने पूंजीवाद, साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद को जन्म दिया। प्रौद्योगिकी के कारण उत्पादन के तरीके में बदलाव ही नहीं आया, बल्कि प्र.ति के प्रति मानव स्वभाव, धर्म, नीति, विज्ञान, ज्ञान तकनीक तथा अर्थव्यवस्था सभी में बदलाव आया। श्रम की अवधारणा ही बदल गई। यह केवल अनपढ़ और पिछड़े वर्गों के लोगों के करने योग्य माने जाने लगा। गांधी के अनुसार 'श्रम की बचत करने वाली मशीन' मजदूरों को आप्रसंगिक बनाकर 'श्रम से तो बचाती' हैं, लेकिन गुलामी और भीषण गरीबी में उसे धकेल देती है। मशीनों के कारण ऐसी अर्थव्यवस्था का जन्म हुआ, जो मुनाफे के अंधी दौर पर आधारित है और जिसके परिणामस्वरूप समाज के वर्गों के बीच घृणा और हिंसा की आशंका बनी रहती है। गांधीजी ऐसी अर्थव्यवस्था चाहते थे, जिसमें हर व्यक्ति के पास अपनी जरूरतों के लिए पर्याप्त धन हो, समाज में व्यक्तियों के बीच समरसता हो। उनकी आर्थिक स्वराज की अवधारणा सर्वोदय है। सर्वोदय अर्थात सभी की अधिकतम भलाई। इसके लिए गांधी ने औद्योगिकीकरण के स्थान पर कुटीर उद्योगों का समर्थन किया, क्योंकि इसके द्वारा ही भारत के करोड़ों ग्रामीण रोजगार, भूखे लोगों को शारीरिक श्रम द्वारा आजीविका का साधन मिल सकता था। वे चाहते थे कि स्वशासित ग्राम गणतंत्र आर्थिक रूप से आत्म निर्भर एक ऐसी इकाई हो, जहां के निवासी सामूहिक रूप से उन सभी वस्तुओं का उत्पादन करें, जो उनके लिए जरूरी हैं। इससे सभी लोग उत्पादको या किसानों या दस्तकारों के रूप में लगभग समान आय अर्जित करेंगे, समान समाजिक दर्जे प्राप्त करेंगे क्योंकि सभी लोग जीवन की सृजनात्मक प्रक्रिया में भाग लेंगे और समुदाय की आत्मनिर्भरता के लिए पूरे समाज हेतु काम कर रहे होंगे, इसलिए सभी व्यक्तियों का नैतिक व्यक्तित्व ऊंचा उठेगा। गांधी स्वराज में सभी जन की भौतिक समृद्धि पर उतना ही बल देते थे जितना कि उनके बौद्धिक विकास, नैतिक उत्थान, शारीरिक स्वास्थ्य और सामाजिक उत्थान पर।

मशीनों द्वारा बड़े पैमाने पर उत्पादन से पारिस्थितिकी को नुकसान पहुंचता है। प्र.ति जो पहले अपनी इच्छा और नियमों में बंधी हुई थी, वह अब मनुष्यों की जरूरतों का साधनमात्र बन गया। गांधी जी पूरी .ढ़ता से कहते हैं कि धरती के पास हर इंसान की जरूरतों को पूरा करने के लिए बहुत कुछ है, मगर वह हर व्यक्ति के लालच को पूरा नहीं कर सकता। मशीनों के प्रयोग से मनुष्य का लालच भी बढ़ता है, जिसके कारण वह प्र.ति के विपरीत जाकर अपने उद्देश्यों को पूरा कर सकता है। इसी लालच से उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद का जन्म हुआ और इसी लालच ने आर्थिक हितों को पूरा करने के लिए शोषण का जन्म दिया। मशीनों ने एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र का शोषण करने में समर्थ बनाया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. संपूर्ण गाँधी वांग्मय, खंड–10, पे०–7, 'हिंद स्वराज' का प्रस्तावना,22.11.1909.
2. सरजीत कौर जौली, गाँधी: एक अध्ययन, पे०–49.
3. वही, पे०–104.

*****